Registration No. V-36244/2008-09 **ISSN :- 2350-0611**

The journal has been listed in 'UGC Approved List of Journals' with Journal No. – 48441 in previous list of UGC

JIFE Impact Factor – 3.23

Research Highlights

A Multidisciplinary Quarterly International Peer Reviewed Referred Research Journal

Editor
Dr. Kamlesh Kumar Singh
Assistant Professor
Gaya Prasad Smarak Govt. P.G. College
Azamgarh

Volume - X **No. - 1** **(Jan. – Mar. 2023)**

Published by
Future Fact Society
Varanasi (U.P.) India

CONTENTS

"Research Highlights"

➲	प्राचीन भारत में राजकीय आय के स्रोत ***डॉ. दीपक कुमार***	01-04
➲	विकास से विस्थापन तक का सफर ***रिंकी कुमारी***	05-07
➲	गोदान और प्रेमचंद की नारी दृष्टि :– पुनरावलोकन ***सुनन्दा कुमारी***	08-11
➲	शमशेर के काव्य में सौंदर्य–बोध ***डॉ. राजेश कुमार चौधरी***	12-15
➲	मलिन बस्तियों के बच्चों की शैक्षिक समस्याएँ एवं समाधान (पटना जिला के विशेष सन्दर्भ में) ***संतोषी कुमारी***	16-21
➲	'संदेश रासक': हिंदी संदेश काव्य की लोक परंपरा ***मनीष यादव***	22-24
➲	दलित कहानियों में प्रतिरोध के स्वर ***मुन्ना कुमार राम***	25-27
➲	आधुनिक गीत मूल्यांकन एवं प्रासंगिकता ***अजेय कुमार***	28-31
➲	भारतीय कथा–साहित्य में विभाजन का दंश ***वर्षा कुमारी***	32-34
➲	पं0 श्री रामवल्लभा शरण जी की कृतियों में ग्राम्य जीवन शैली एवं सामाजिक समरसता का अनुशीलन ***डॉ. कमलेश थापक*** ***शैलेन्द्र शुक्ल***	35
➲	वाराणसी जिले में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना के अन्तर्गत रोजगार सृजन की स्थितिः एक विश्लेषण ***गोपाल प्रसाद*** ***डॉ. राजीव कुमार***	36-42
➲	स्टार्ट अप और उभरता भारतः विश्व पटल पर ***डॉ. मोनिका जायसवाल***	43-48
➲	भारत–नेपाल द्विपक्षीय संबंध ***आलोक चन्द्र*** ***डॉ. नरेन्द्र कुमार आर्य***	49-54
➲	भारत में पंचायतीराज और महिला सहभागिता ***डॉ. कमलेश कुमार सिंह*** ***अनिल कुमार सिंह यादव***	55-58
➲	समकालीन पत्रकारिता और बाजार का संकट ***डॉ. मोहित मिश्रा***	59-61

समकालीन पत्रकारिता और बाजार का संकट

डॉ. मोहित मिश्रा*

पत्र–पत्रिकाओं का उद्‌भव के साथ आधुनिक साहित्य का भी विकास हुआ है। प्रारंभ से ही पत्रकारिता और साहित्य ने समाज को दिशा देने का कार्य किया हैं, जिसके कारण साहित्य और पत्रकारिता का एक गहरा संबंध बना हुआ है। साहित्यकार अपनी रचना में समसामयिक परिवेश को उद्‌घाटित करने का कार्य करता है। इसी प्रकार पत्र–पत्रिकाएँ में भी अपने परिवेश को चित्रित किया जाता हैं। साहित्य की भाँति पत्रकारिता को भी समाज का दर्पण कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जागरूक समाज के निर्माण में साहित्यिक पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पत्रकारिता में प्रारंभ से ही साहित्य का एक अनिवार्य स्थान रहा है। प्रारम्भिक दौर के प्रायः अनेक महत्वपूर्ण साहित्यकार पत्र–पत्रिकाओं के संपादक रहे हैं, या किसी न किसी रूप में पत्र–पत्रिकाओं से जुड़े रहे हैं। साहित्य की विकास यात्रा को समझने के लिए पत्र–पत्रिकाओं को महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। साहित्य में जहाँ प्राणी मात्र का अंतः और बाह्य जगत चित्रित होता है, वहीं पत्र–पत्रिकाओं में समाज एवं जीवन का प्रतिबिम्ब अंकित होता है। हिंदी समाज, भाषा और साहित्य की संरचना में पत्र–पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। मानव जीवन की विविध समस्याओं और उनसे संबंधित समाधानों को भी इनमें स्थान मिलता रहा है, हालांकि यह कहीं न कहीं कुछ सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित होती है। इसमें परंपरा और मौलिकता का समन्वय होता है।

उदन्त मार्तण्ड को हिंदी का प्रथम समाचार–पत्र होने का गौरव प्राप्त है। उदन्त मार्तण्ड के प्रकाशन से प्रारंभ हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का वर्तमान में जो स्वरूप हम देखते हैं, वहाँ तक का सफर काफी उतार–चढ़ाव भरा रहा है। यह सफर रोचक होने के साथ–साथ मार्मिक भी है। उदन्त मार्तण्ड के उपरांत कलकत्ता से ही बहुभाषी हिंदी हेराल्ड का प्रकाशन हुआ इस पत्र में हिंदू समाज में व्याप्त अशिक्षा, नारी शोषण, बाल विवाह, सती–प्रथा आदि विषयों को भी स्थान दिया गया। 1877 ई. में प्रकाशित हिंदी–प्रदीप पत्रिका में बालकृष्ण भट्ट साहित्यिक रचनाओं की समीक्षा तथा उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए निबंध प्रकाशित करते थे। पत्रिका में प्रकाशित होने वाली समीक्षा के तेवर तीखे होते थे। इसमें गद्य–पद्य की रचनाओं को स्थान मिलता था। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार "हिंदी प्रदीप के लेखों और टिप्पणियों की निर्भीकता हिंदी पत्रकारिता की उस श्रृंखला का अंग है जो भारतेंदु की कवि–वचन–सुधा और हरिश्चंद्र मैगजीन/चंद्रिका से आरंभ होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी की सरस्वती तक चलती है। भारतेंदु युग के और द्विवेदी युग के लेखकों का प्रशिक्षण पत्रकारिता की पाठशाला में हुआ है।"[1]

साहित्यिक पत्रकारिता के दूसरे चरण में भारतेंदु हरिश्चंद्र का आगमन एक महत्वपूर्ण बिंदु है। उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया। वे एक संपादक होने के साथ साहित्यिकार भी थे, जिन्होंने नाटक, निबंध आदि को पत्रिकाओं में प्रकाशित किया। इस युग में पत्र–पत्रिकाएँ साहित्य के साथ गहराई से जुड़ती हुई दिखाई देती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कविवचनसुधा नामक पत्रिका का संपादन आरंभ किया। इस युग के प्रसिद्ध साहित्यकार पत्रिकाओं के संपादक भी थे। वे अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करने के लिए अपने विचारों का प्रचार–प्रसार पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से करते थे। इनके निबन्धों में जीवन व्यक्तित्व की छाप देखने को मिलती है। ज्योतिष जोशी लिखते हैं कि "भारतेंदु द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं ने हिंदी की पत्रकारिता को नई जागृति से जोड़ा ही, उसे राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति भी सजग किया। स्वाधीनता के प्रति जागरण का संदेश देने के साथ–साथ इस युग के पत्र–पत्रिकाओं ने युवकों को उद्यमी तथा आत्मनिर्भर बनने की सिख भी दी जो भ्रम में जीने को अभ्यस्त हो चले थे।"[2] इस समय की पत्र–पत्रिकाओं का प्रमुख उद्देश्य राजनैतिक और सामाजिक गतिविधियों को उजागर करना था, जिसके चलते पत्रिकाओं में साहित्य के माध्यम से राजनैतिक और सामाजिक विचारों को प्रकट करने का कार्य किया गया।

भारतेंदु युग में पत्रिकाओं के माध्यम से ही भाषा के परिस्कार पर अनेक लेख प्रकाशित हुए । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भारतेंदु युगीन पत्रिकाओं पर टिप्पणी करते हुए कहा है, कि "हिंदी गद्य का ठीक परिष्कृतरूप पहले पहल चंद्रिका में प्रकट हुआ। जिस प्यारी हिंदी को देश ने अपनी विभूति समझा जिसको

* आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, संपर्क सूत्र–7982349547

जनता ने उत्कंठापूर्वक दौड़कर अपनाया, उसका दर्शन इसी पत्रिका में हुआ...इस हरिश्चंद्री हिंदी के आविर्भाव के साथ ही नए–नए लेखक भी तैयार होने लगे। चंद्रिका में भारतेंदु आप तो लिखते ही थे बहुत से और लेखक भी उन्होंने उत्साह दे–देकर तैयार कर लिए।"[3] महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी पत्रकारिता को एक महत्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया । उन्होंने लेखों और पुस्तकों में व्याकरण और भाषा की अशुद्धियाँ दिखाकर लेखकों को सावधान किया, जिसके जरिये भाषा में एक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया। पहली हिंदी कहानी भी सरस्वती पत्रिका में ही प्रकाशित हुई। पत्रिकाओं से भाषा और साहित्य का साथ–साथ विकास हुआ। कुछ अन्य पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुईं, जिनसे समाज सुधार और राजनीतिक जागरण के कार्यक्रम चलते रहे। गद्य के साथ कविता का भी विकास हुआ। इस समय की पत्रिकाओं ने साहित्य को दरबार, पंडितों और विद्वानों तक ही सीमित न रखकर जन–सामान्य तक पहुँचाने का कार्य किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सरस्वती पत्रिका के लिए कहा है, कि "यह नवीन हिंदी साहित्य का द्वितीय उत्थान था जिसके आरंभ में सरस्वती पत्रिका के दर्शन हुए"[4]।

वर्तमान परिस्थिति में साहित्य और पत्रकारिता दोनों अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुके हैं। स्वतंत्रता के बाद जिस प्रकार से विकास की गति तेज हुई, उसी प्रकार साहित्य और पत्रकारिता का भी भिन्न स्वरूप विकसित हुआ। पत्रकारिता का कार्य सूचना देना जागरूकता फैलने तक सीमित रह गया, जबकि साहित्य समाज के सभी वर्ग–समूहों को साथ लेकर चलने का प्रयास करता रहा है। पत्र–पत्रिकाओं को भी समूह में विभक्त कर दिया गया। आज साहित्यिक पत्रिकाओं और समाचार पत्र–पत्रिकाओं में अन्तर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। समाचार आधारित पत्रों में साहित्य के लिए एक पृष्ठ या एक दिन निर्धारित हो गया है, जिसमें साहित्यिक रचनाओं को प्रकाशित किया जाता है। संपादक समाचार को रोचकता के साथ प्रस्तुत करने पर ज़ोर देते हैं। उनकी रुचि साहित्य के प्रचार–प्रसार करने की नहीं होती है। इस संबंध में विमल कुमार लिखते हैं, कि "एक जमाना था जब साहित्य और पत्रकारिता का रिश्ता अटूट हुआ करता था क्योंकि अक्सर साहित्य में रुचि रखने वाले लोग पत्रकार बनते थे और हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के संपादक जाने–माने साहित्यकार होते थे और अगर नहीं होते थे तो कम से कम वे साहित्य और साहित्यकारों के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव रखते थे, पर अब यह रिश्ता लगभग टूट गया है।"[5]

समकालीन पत्र–पत्रिकाओं के संपादक बाजार को ध्यान में रखकर काम करते हैं। आज संपादक पत्र में समाचारों को प्राथमिकता देते हैं। उनके लिए साहित्य को पत्र में स्थान देना महत्वपूर्ण नहीं होता। संपादक समाचार पत्रों में संवेदना के स्थान पर सूचना को महत्व देते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाचार पत्रों का स्वरूप बदल गया। स्वतंत्रता से पूर्व पत्र–पत्रकारिता के प्रारंभ में साहित्यकार समाज के कल्याण और विकास के लिए कार्य करते थे, परंतु वर्तमान में संपादक समाचारों को समाचार पत्र के हित में बनाकर प्रस्तुत करते हैं। इस संदर्भ में विमल कुमार कहते हैं, कि "साहित्य और पत्रकारिता के रिश्ते टूटने का मूल कारण यह है कि पत्रकारिता में अब वह संवेदना नहीं रही। वह जनसाधना नहीं रही जो साहित्य में मूलतः होती है। लेकिन कभी पत्रकारिता का मूल उद्देश्य यह था कि वह समाज के अंतिम आदमी की खबर ले और संवेदना के क्षरण को बचाए, उसकी रक्षा करे पर पिछले दो तीन दशकों में देश की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति से जो बदलाव आए हैं, उसका असर साहित्य और पत्रकारिता के रिश्ते पर भी पड़ा है।"[6]

आज बढ़ती व्यावसायिक दखल के कारण पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य के स्थान और प्रवृत्ति में बदलाव देखने को मिलता है। पत्रकारिता के स्वरूप में समय के साथ होने वाले परिवर्तन को देखा जा सकता है। आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक परिवर्तन के चलते साहित्यिक लेखन में भी बदलाव आया है, जिसके चलते साहित्यिक पत्रिकाओं और समाचार आधारित पत्र–पत्रिकाओं के बीच एक फासला बनता जा रहा है। साहित्यिक पत्रकारिता के माध्यम से अपने युग की समस्याओं के ज्वलन्त प्रश्नों को उठाने का कार्य किया जाता है। साहित्यिक पत्रकारिता सामाजिक दायित्व को निभाती है क्योंकि प्रारंभ से ही एक साहित्यकार का मानव समाज के प्रति दायित्व रहा है। साहित्यिक पत्रिकाओं का स्थान अब उन पत्रिकाओं ने ले लिया है, जो आर्थिक और राजनीतिक विषय पर आधारित होती हैं। औद्योगिक समय में हिंदी की अधिकतर पत्रिकाओं में साहित्य का स्थान कम हो रहा है । पत्रिकाओं में विज्ञापन, फिल्म जगत मनोरंजन खेल और व्यापार का बोलबाला हो गया है । आज बाजार की प्रतिस्पर्धा में समाचार पत्र–पत्रिकाएँ पाठकों को आकर्षित करने के लिए नए–नए प्रयोग करते है। पत्रकारिता पूर्णरूप से व्यवसाय करने वालों के नियंत्रण में चली गयी हैं। जिनके लिए जन–कल्याण प्रमुख नहीं है। यह पत्रिकाएं बाजारीकरण की दृष्टि से ही कार्य करती हैं, लेकिन समाज का वैचारिक पोषण नहीं कर पाती। भारत में साहित्यिक पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा और अन्य क्षेत्रीय

भाषाओं को नई ऊंचाईयां प्रदान की है। वर्तमान समय में जब पत्रकारिता अपने नैतिक मूल्यों और उद्देष्यों से अलग हट रही है, ऐसे में साहित्यिक पत्रिकाओं की आवश्यकता जान पड़ती है। जो साहित्य को नई उचाई देने में सहायक सिद्ध होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ स.– 89
2. साहित्यिक पत्रकारिता, ज्योतिष जोशी, पृष्ठ स.–16
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ स.– 310
4. उपर्युक्त, पृष्ठ स.–327
5. विमल कुमार, अंक– अगस्त, 2012, पृष्ठ स–68
6. उपर्युक्त, पृष्ठ स–68